शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2014

अमरकांत की कहानियों में समकालीन परिवेश

कु. उषा बुंदेला, शोधार्थी

शोध संक्षेप

अमरकांत जी सन् 1925 नई कहानी अमरकांत के दौर अग्रणी कथाकार है। अमरकांत जी ने जिस समय लेखन शुरू किया वह नयी कहनी का दौर था अमरकांत जी का लेखन उनके जीवन संघर्ष का लेखन है अमरकांत जी प्रेमचंद जी कि कथा परम्परा के विकास में अपने ढंग अकेले रचनाकार सिद्ध होते है। अमरकांत जी का साहित्यकार का रूप कम औसत बेरोजगार आदमी का रूप ज्यादा उजागर होता है। अमरकांत जी अपने समय के कहानीकारों में सबसे युवा व आकर्षण परिपक्व और प्रबुद्ध भी है। अमरकांत जी प्रगतिशील चिंतनधारा के कहानीकार हैं।

प्रस्तावना

अमरकांत जी सन् 1925 नई कहानी अमरकांत के दौर अग्रणी कथाकार हैं। अमरकांत जी ने जिस समय लेखन शुरू किया वह नयी कहानी का दौर था। अमरकांत जी का लेखन उनके जीवन संघर्ष का लेखन है। अमरकांत जी प्रेमचंद जी की कथा परम्परा के विकास में अपने ढंग के अकेले रचनाकार सिद्ध होते हैं। अमरकांत जी का साहित्यकार का रूप कम औसत बेरोजगार आदमी का रूप ज्यादा उजागर होता है। अमरकांत जी अपने समय के कहानीकारों में सबसे युवा व आकर्षक, परिपक्व और प्रबुद्ध भी हैं। अमरकांत जी प्रगतिशील चिंतनधारा के कहानीकार हैं। नयी कहानी आंदोलन और उस के बाद भी प्रगतिशील चिंतन जिस दिशा में बढ़ा है, उसमें अमरकांत जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नयी कहानी आंदोलन के दौर की उनकी कहानियों से आज तक अमरकांत समकालीन कहानी के केंद्र बने हुए है। हर दौर में उनकी रचना धर्मिता कहानी और उपन्यासों के रूप में विकसित होती रही है।

नयी कहानी और अमरकांत

नयी कहानी के दौर में 'मोहभंग' का नारा खूब उछला। यहाँ तक कि उसने यथार्थ के दूसरे और अधिक गतिशील रूपों को चर्चा से कुछ समय के लिए बाहर कर दिया। अमरकांत की कहानियो में मोहभंग के बावजूद लड़ता हुआ निम्न मध्यवर्ग और सर्वहारा है। अमरकांत की कहानियो में इतनी पारदर्शी और पहचान से मिलती है कि लगता है हमारे आस-पास निम्नवर्गीय बस्तियों गलियों से गाँव-कस्बों के लोग उनकी कहानियों में दाखिल हो रहे हैं। अमरकांत जी ने अपने लम्बे रचना काल में श्रेष्ठ उपन्यास भी लिखे। उनमें सामाजिक-आर्थिक विषमताओ के संकेत मिलते हैं। नयी कहानी के दौर में अमरकांत ऐसे पक्षकार हैं, जो तमाम प्रसिद्ध घेरों से मुक्त रह कर पात्रों के माध्यम से सामाजिक जीवन का सूक्ष्म एवं जीवित चित्रण करते हैं। स्वतंत्रता के

बाद मोहभंग की स्थिति में विभिन्न वर्ग के पात्रों का जीवन और चिंतन कैसा रहा, इसका बडा स्वाभाविक चित्रण उनकी कहानियों में है। अमरकांत जी के प्रमुख उपन्यास – सूखा पत्ता, ग्राम सेविका, पराई डाली का पंछी, कटीली राह के फूल, काले उजले दिन, बीच की दीवार, सुखीजीवी तथा सुन्नर पाण्डे की पतोहू।

अमरकांत जी के उपन्यासों का कथा फलक व्यापक है। स्वातंत्रोत्तर भारत का सम्पूर्ण अंतरग बहिरंग चाहे सामाजिक हो या राजनीतिक, आर्थिक हो या धार्मिक, शहरी या ग्रामीण, शोषक हो या शोषित, उच्च वर्ग हो या मध्य वर्ग अथवा निम्न शिक्षित हो या अशिक्षित सभी का प्रतिनिधित्व किया है।

अमरकांत का कृतित्व - इंटरव्यू, जिंदगी और जोंक, दोपहर का भोजन, डिप्टी कलेक्टरी, पलाश के फूल, मुस, हत्यारे, असमर्थ का हिलता हाथ, बस्ती, मित्र मिलन, मौत का नगर, दुर्घटना, घर, फर्क, प्रिय मेहमान, लड़की कि शादी। नेहरु भाई, वानर सेना, खुटा में दाल है, सुग्गी चाची का गाँव, एक स्त्री का सर, झगरु लाला का फेसला प्रौढ़ साहित्य है। अमरकांत को लेखन के लिए सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार, यशपाल पुरस्कार प्राप्त हुए। अमरकांत नयी कहानी के सशक्त रचनाकार हैं। अतः स्वतन्त्र भारत की उन नवीन प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति उनकी कहानियो में सफलतापूर्वक होती है। जो नयी कहानी का आधार रही है। अमरकांत ने गरीबी की जिंदगी व्यतीत करने वाले ऐसे चरित्रों को अपनी कहानी का विषय बनाया है। जिंदगी और जोंक, मूस और कुहासा आदि कहानियों के पात्र इस श्रेणी में रखे जा सकते हैं। अमरकांत ने अपनी कहानियों में ऐसे चरित्रों को भी उजागर किया है, जो अपनी धूर्त और चालाक हरकतों से सीधे-सादे लोगों का शोषण करते हैं। जिम्मेदारी आ जाने पर भाग खडे होते हैं। ऐसे लोग बड़े ही तिकडमी और खुदगर्ज होते हैं। पलाश के फूल का चरित्र राइ साहब का ऐसा चरित्र है, जो अपने कृत्य को आध्यात्मिकता का रूप देकर पूरे प्रकरण से अलग कर लेता है । अमरकांत के पात्र अपना निजी व्यक्तित्व और विशिष्टताएँ रखते हुए एक सम्पूर्ण वर्ग या समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं, इनकी सोच पूरे वर्ग की मानसिक प्रतिक्रिया को प्रस्तुत करती है। डिप्टी कलेक्टरी के शकलदीप बाबू गरीबों और तंगहाली की जिंदगी में भी अपने बेटे नारायण को भी डिप्टी कलेक्टर बनते देखना चाहते हैं, पर मोहभंग और निराशा के कारण विश्वास नहीं कर पाते। ऐसा हो सकता है। शकलदीप बाबू अपने पुत्र में सपने देखते रहते हैं और सफलता की कामना भगवान से करते रहते हैं। अमरकांत के अधिकांश पात्र अपनी समस्याओं, स्थितियों या सपनों में उलझे फंसे और डूबे हुए लोग हैं और दूसरी निगाह से देखने पर उनके सारे प्रयास हास्यास्पद बनकर रह जाते हैं। व्यंग्य के माध्यम से अमरकांत ने इन पात्रों की जीवंत स्थिति को प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत किया है। अमरकांत ने चरित्रों को जीवन की वास्तविकता से ग्रहण किया है। इन चरित्रों में उच्च वर्ग के चरित्र हैं, मध्यवर्ग के चरित्र हैं और निम्न मधयवर्ग के चरित्र हैं।, उच्च वर्ग के चरित्र जहाँ अन्य वर्गों को हेय और उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, वहीं मध्य वर्ग चरित्र निम्नवर्गीय

चरित्रों का शोषण करने में कोई कसर नहीं छोडते। अमरकांत की कहानियों में उच्चवर्गीय पात्र कम हैं, मध्यवर्गीय पात्र हैं, जो बातें तो करते हैं क्रांति की और सपने देखते हैं उच्चवर्ग के। इसलिए अमरकांत ने दिखाया है कि ऐसे चरित्रों के आधार पर समाज में क्रन्तिकारी परिवर्तन की आशा करना व्यर्थ है। शायद इसी कारण अमरकांत की कहानियो में निम्न मध्यवर्गीय और निम्न वर्गीय चरित्रों की संख्या अधिक है। अमरकांत ने इन चरित्रों के माध्यम से समाज के ऐसे लोगों को सामने रखा है, जो शातिर है बदमाश और ढोंगी हैं। अवसर मिलते ही शोषण करते हैं। अमरकांत के निम्नवर्गीय चरित्र मुस, परबतिया, मुनरी तथा उनसे भी दयनीय स्थिति वाले चरित्र दूबर, रजुआ, बहादुर तथा जंतू आदि हैं, जो किसी प्रकार अपनी जिंदगी जी रहे हैं। इनमें रजुआ, बहादुर जंतु और दूबर तो ऐसे चरित्र हैं, जो बहुत गरीब हैं। इतने गरीब हैं कि नौकरी न मिले तो भूखे मर जाएँ। इनमें भी घरों में काम करने वाले पात्र भी सर्वाधिक निरीह और दया के पात्र हैं, क्योंकि वे काम तो करते हैं और पिटते हैं। जबकि उनकी अपनी गलती नही होती। बल्कि दूसरों के दोष के लिए भी पिटाई उन्हीं की होती है। ऐसे चरित्रो में अमरकांत की सर्वाधिक सहनुभूति निम्नवर्गीय पात्रों के साथ है। ऐसे चरित्र अन्याय और शोषण का शिकार हैं। और जीवन के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वस्तुतः अमरकांत के चरित्र हमारे समाज का एक यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।